हज़रत फ़ातिमा ज़हरा(स०) ज़िन्द-ए-जावेद नमून-ए-अमल

प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़्वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलवातुल्लाहि अलैहा पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की दुख़्तरे अर्जुमन्द, जिनसे रसूले अकरम[स०] की ज़ुर्रियत और पाक नस्ल दुनिया में बाक़ी है, हज़रत अली शेरे ख़ुदा की ज़ौजा और शियों के ग्यारह इमामों की मादरे गिरामी हैं जिनको इस्लाम ने ख़वातीन के लिए नमूना बनाकर पेश किया है।

इस्लाम ने महज़ किताब और शरीअत पर इक्तेफ़ा नहीं किया बल्कि आइन के साथ बाज़ शख़सियतों को राहनुमा और अमली नमूने के तौर पर मुन्तख़ब किया है ताकि वह किताब की तालीम और इस्लाम की रूह और उसके जौहर को अपने किरदारो अमल की सूरत में पेश करें। पैग़म्बर और बारह इमाम इसी तरह के नमूने हैं।

ख़ुदाए तआला ने मर्द और औरत को मुख़तलिफ़ ख़ुसूसियत के साथ पैदा किया है। बहुत से ऐसे हालात, कैफ़ियतें, जज़्बात और ताल्लुक़ात औरत में पाये जाते हैं जो मर्द में नहीं पाये जाते हैं। इसलिए ज़रूरी था कि इस्लाम, पैग़म्बर और अइम्मा के साथ-साथ औरतों के लिए भी ख़ास नमूना और उसवा पेश करे। एक ऐसी हस्ती जो ये बताये कि एक मुसलमान ख़ातून को कैसा होना चाहिए? बाप, शौहर, फ़रज़न्द और समाजी व सियासी ज़िन्दगी के सिलसिले में एक औरत का क्या बर्ताव होना चाहिए? जनाब फ़ातिमा[स०] ऐसी ही हस्ती हैं जिन्हें इस्लाम ने एक मिसाली ख़ातून की सूरत में पेश किया है। इसी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने जनाब फ़ातिमा[स०] से ख़िताब करते हुए फ़रमायाः ''मरियम अपने ज़माने की आला तरीन ख़ातून थीं मगर तुम हर ज़माने और हर सदी की आला तरीन ख़ातून हो।''

इस तरह जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] तमाम ख़वातीन के लिए एक नमूना और मिसाल हैं। नामवर मिस्री मुहक़्क़िक़ अब्बास महमूद अल-एक़ाद भी इस नुकते की तरफ़ इशारा करते हुए लिखता हैः ''हर दीन में एक ऐसी मुक़द्दस और कामिल ख़ातून का वजूद होता है जिसे उस दीन के मानने वाले ख़ुदावन्दे तआला की निशानी समझते हुए उसकी तक़दीस के मोतक़िद होते हैं, ईसाई मज़हब में जनाब मरियम का वजूदे मुक़द्दस और अफ़ज़ल माना गया है, इसी तरह इस्लाम में हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] एक मिसाली ख़ातून हैं।

दीन में एक मुक़द्दस 'ख़ातूने कामिल' इस दीन की तालीमात और ख़ुसूसियात का अमली मज़हर होती है। मिसाल के तौर पर तहरीफ़ शुदा मसीहियत चूँकि रहबानियत, गोशा नशीनी और मआशरे से बेताल्लुक़ होकर मानवियत और रूहानियत से मुन्सलिक रहने का अक़ीदा पेश करती है, इसलिए मज़हब की मिसाली ख़ातून यानी मरियम अज़रा की जो शक्ल मसीही पेश करते हैं वह इन ही ख़ुसूसियात की मज़हर है।

लेकिन इस्लाम एक ऐसा दीन है जिसके मुतअद्दिद पहलू हैं। इस्लाम में मानवियत, इज्तेमाई व सियासी ज़िन्दगी से ताल्लुक़, इबादत, ख़ानदानी और घरेलू ज़िम्मेदारियाँ, इरफ़ान और जोहाद यानी ज़िन्दगी का हर रुख़ मौजूद है। हज़रत ज़हरा[स०] ने भी जो इस्लाम की मिसाली ख़ातून हैं, जिनकी पाकीज़ा सीरत तमाम मुसलमान ख़वातीन के लिए नमूना है, अपनी ज़िन्दगी में दीने इस्लाम के हर रुख़ को पेश फ़रमाया है। अक्सर उलमा और मोहक़्क़िीन मसलन तक़ी सबक़ी, जलाली सुयूती, ज़रकशी और तक़ी मक़रेज़ी तमाम दुनिया की ख़वातीन पर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की अफ़ज़लियत और उनके किरदार और मिसाली सीरत के मोअ्तरिफ़ हैं और

इसका नुमायाँ तौर पर ज़िक्र भी फ़रमाया है। चुनानचे तक़ी सबकी जो उलमा-ए-अहलेसुन्नत में से हैं इस सवाल का कि ''इस्लाम में अफ़ज़ल तरीन ख़ातून कौन हैं?'' यूँ जवाब देते हैं ''मेरा एतेक़ाद है कि फ़ातिमा[स॰] दुख़्तरे मुहम्मद सारी दुनिया की औरतों में अफ़ज़ल तरीन ख़ातून है।'' इब्ने दाऊद ने इसी सवाल के जवाब में कहा है कि ''जब पैग़म्बरे ख़ुदा ने जनाब फ़ातिमा ज़हरा को अपने जिस्म का टुकड़ा कहा है तो अब इसके बाद किसी और का उनसे अफ़ज़ल होना क़तई नामुमकिन है इसलिए कि पैग़म्बर के जिस्म के टुकड़े पर किसी को क़यास नहीं किया जा सकता।

मोअ्तबर अहादीस और अख़बार के मुताबिक़ पैग़म्बरे इस्लाम ने ख़ुद जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] को ''दुनिया की तमाम औरतों की सरदार'' कहा है और उनकी पाकीज़ा सीरत को ख़वातीने आलम के लिए तारीख़ी नमूना बनाकर पेश किया। अहलेसुन्नत की मोअ्तबर किताबों में हज़रत आयशा से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा[स॰] ने जनाब फ़ातिमा[स॰] से कहाः ''जाने पिदर फ़ातिमा[स॰] क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं हो कि तुम तमाम ख़वातीन से अफ़ज़ल और मेरी पूरी उम्मत की ख़वातीन की सरदार हो और बाईमान औरतों में सबसे बरतर हो?''

इमरान बिन हसीन से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा[स॰] ने जनाब फ़ातिमा से पूछाः ''ऐ जाने पिदर! क्या तुम्हें ये जानकर ख़ुशी नहीं हुई कि तमाम आलम की ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल व बरतर हो?'' जवाब में जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] ने सवाल किया कि ''अगर मैं सबसे अफ़ज़ल हूँ तो मरियम बिन्ते इमरान क्या हैं?'' रसूलुल्लाह[स॰] ने फ़रमाया ''वह सिर्फ़ अपने दौर की ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल हैं और तुम हर दौर की ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल हो।'' इस तरह जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] दुनिया की तमाम ख़वातीन के लिए एक मिसाली ख़ातून और नमून-ए-अमल हैं।

उन्होंने नमूना पेश किया है कि एक मुसलमान ख़ातून को किस तरह रूहानियत से भी मुताल्लिक़ रहना चाहिए और ख़ानदान की ज़िम्मेदारियों का भी ख़याल होना चाहिए और साथ ही साथ समाजी और अक़ीदती जेहाद में शामिल रहना चाहिए। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स॰] की ज़िन्दगी में हम इरफ़ान, घर के काम-काज करना और इज्तेमाई व एतेक़ादी जेहाद तीनों पहलुओं को अपने उरूज पर पाते हैं।

मुबाहला जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] के मानवी व इरफ़ानी मक़ामात की रफ़अत की एक अबदी सनद है। मुबाहला के तारीख़ी वाक़िए में नजरान के नसारा जो इबादत व रियाज़त में मशहूर हो चुके थे, उनसे मुक़ाबले में रूहानी व मानवी एतेबार से पूरे गिरोहे इस्लामी में सिर्फ़ पाँच लोगों को चुना गया, उन पाँच रूहानी लोगों में से एक फ़र्द जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] हैं। नसारा अपनी मानवी क़ुव्वत पर बहुत घमण्ड करते थे, मगर इन ख़ुदाई हस्तियों के मुक़ाबिल ठहरने की जुराअत न कर सके। अबूहारसा अस्क़फ़ नसारा मुबाहला करने से रुक गया। जब उसके साथियों ने उससे पूछा कि ''तू ने मुहम्मद से मुबाहले का ख़याल तर्क क्यों कर दिया? तो उसने जवाब दिया ''ख़ुदा की क़सम मैंने ऐसे चेहरे देखे जो अगर दुआ माँगे तो पहाड़ हरकत में आ जाएं और अगर हमारे हक़ में बद्दुआ करें तो साल न गुज़रे कि नसारा में से एक शख़्स दिखाई न दे और उनकी बद्दुआ से सब कुछ तबाह हो जाए।''

ये वाक़िआ मुकम्मल तौर पर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स॰] के आला इरफ़ानी व मानवी मंज़िलत की निशानदही करता है। मसीहियत के बरख़िलाफ़ इस्लामी इरफ़ान व मानवियत रहबानियत या रियाज़त करने वालों का इरफ़ान नहीं है, बल्कि एक जेहादे मुसलसल है जहाँ इन्सान इज्तेमाई ज़िन्दगी से कनाराकश नहीं होता। इस मसले का अमली नमूना जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] ने पेश किया जो तमाम दुनिया की औरतों के लिए बेहतरीन नमूना है।

तारीख़ से साबित होता है कि जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] ने बाज़ ग़ज़वात में भी शिरकत की और पैग़म्बर ने इज्तेमाई मसाएल में आप से मश्वरे भी लिये हैं और जंगों में बाज़ ज़िम्मेदारियाँ आपके सुपुर्द थीं।

जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] ने मआशरे की इज्तेमाई

और फ़िक्री ज़िन्दगी में भी शिरकत की है, पैग़म्बर[स॰] की हदीसें भी बयान फ़रमाती थीं, ख़वातीन की हिदायत भी करती थीं, जंगों में हिस्सा भी लेती थीं और वक़्त ज़रूरत तलवारों और तीरों की बारिश में अपने वालिद और अपने शौहर का साथ भी देती थीं, प्यासों को पानी पिलाती थीं, ज़ख़्मों में मरहम पट्टी भी करती थीं और लश्करे इस्लाम की ग़ैरत को भी ललकारती थीं। वाक़िदी ने लिखा है कि "हज़रत फ़ातिम ज़हरा ने जंगे ओहद में ज़ख़्मी लोगों की मदद की और उनके ज़ख़मों पर मरहम रखा। दूसरे इज्तेमाओी मसाएल में भी वह अपने वालिद की मुआविन रही हैं जैसा कि तारीख़ से ज़ाहिर है कि जब ख़वातीन पैग़म्बर की बैअत कर रही थीं तो वह जनाब रसूले ख़ुदा[स॰] के साथ थीं।

पैग़म्बर[स॰] के बाद भी जनाब ज़हरा[स॰] इस्लामी मआशरे की ख़बरगीरी करती रहीं बल्कि यूँ कहना चाहिए कि जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] वह पहली ताक़तवर हस्ती थीं जो फ़रयाद करने और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करने मस्जिदे नबवी में गईं। आपकी शोला बयान और ज़लज़ला पैदा करने वाली तक़रीर आपकी शुजाअत, शहामत, इलाही निगाह और सियासी व इज्तेमाओी दूरबीनी को वाज़ेह करती है। इस बात का भी पता चलता है कि औरत इस्लामी मआशरे में इज्तेमाओी सियासी और आरतों के बारे में पैदा होने वाले मसाएल से अगल नही है। इस्लामी मआशरा की क़िस्मत बनाने में हिस्सा लेने के बाद भी मुस्लिम औरत को ये नहीं भूलना चाहिए कि वह "औरत" है। ऐसी सूरत में उसे अपनी इफ़्फ़त, अपने तक़द्दुस और पर्दा को बरक़रार रखना चाहिए। जनाब सैय्यदा ने अपने तौर-तरीक़ों ऊपर लिखी बातों को बताया है।

अनस बिन मालिक से रिवायत है कि पैग़म्बरे ख़ुदा[स॰] ने अपने अस्हाब से पूछा कि "कौन सी चीज़ ख़वातीन के लिए सबसे अच्छी है?" कोई इसका जवाब न दे सका। हज़रत अली[अ॰] फ़ौरन जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] के पास गये और उनसे सवाल के बारे में पूछा। जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] ने कहाः "आप ने क्यों न कह दिया कि ख़वातीन के लिए सबसे बेहतर ये है कि वह मर्दों की जानिब नज़र न करें और मर्दों के लिए सबस बेहतर ये है कि वह ख़वातीन से मरऊब न हों।" हज़रत अली[अ॰] जनाब रसूले ख़ुदा[स॰] की ख़िदमत में तशरीफ़ लाये और यही जवाब दोहराया। रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया "ऐ अली तुमको ये किसने बताया है?" हज़रत अली ने जवाब दियाः "फ़ातिमा ने" इस पर पैग़म्बर ने फ़रमाया "सच तो ये है कि फ़ातिमा मेरे ही जिस्म का एक टुकड़ा है" जनाब ज़हरा ने साबित कर दिया कि एक मुसलमान ख़ातून इस्लामी मआशरे में अपनी निस्वानियत, इफ़्फ़त और ख़ुद्दारी के तहफ़्फ़ुज़ के साथ इज्तेमाओी ज़िन्दगी में भी शिरकत की हक़दार है।

इसी तरह एक मुसलमान ख़ातून, ख़ानदान की ख़िदमात अन्जाम देना और नई नसल की परवरिश व परदाख़्त को अपना फ़रीज़ा समझती है। चुनानचे जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] एक तरफ़ इरफ़ानी और रूहानी मक़ामात में आयते ततहीर की तफ़सीर हैं, दूसरी तरफ इज्तेमाओी और सियासी ज़िन्दगी में भी दख़ील हैं। ख़ानदानी और घरेलू माहौल में एक उलफ़त शेआर शरीके हयात, एक दुख़्तरे वफ़ादार और एक मादरे मेहरबान भी हैं। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा अपने वालिदे गिरामी के लिए एक मिसाली औलाद हैं, वह सिर्फ़ औलाद ही नहीं बल्कि अपने बाप की परस्तार, मुशीर, रफ़ीक़ और मुअीन भी हैं। तकलीफ़ों में उनका साथ देती हैं और उन्हें तसल्ली देती हैं। इसी वजह से उन्हें "उम्मो अबीहा" यानी अपने बाप की माँ कहते हैं।

जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] शौहर के लिए एक मेहरो मुहब्बत करने वाली शरीके हयात, हज़रत अली[अ॰] की मोनिसे तनहाई हैं जो अपने शौहर के साथ मुसलसल दुख दर्द झेल रही हैं लेकिन पेशानी पर शिकन तक नहीं आने देती हैं।

जनाब ज़हरा एक ऐसी माँ हैं जिनकी आग़ोश में हसन[अ॰] व हुसैन[अ॰] और ज़ैनब[स॰] जैसी औलाद परवान चढ़ती हैं। इबादातो अख़लाक़ बल्कि हर लेहाज़ से जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स॰] बिला तफ़रीक़ हर एक के लिए नमूना हैं।

(किताब- उस्वहा-ए-जावेद से)